Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 3, July-2023, ISSN 2230-7540

चिकनकारी कढ़ाई कारीगर की चुनौतियों और उद्योग परिदृश्यों का एक अध्ययन

Kiran Sharma[1]*, Dr. Sushma Srivastava[2], Dr. Kamlesh Kumar[3]

[1] Research Scholar, Bhagwant University, Rajasthan

[2,3] Research Guide, Bhagwant University Rajasthan.

सार - ***चिकनकारी कढ़ाई कारीगरों की चुनौतियों और उद्योग की संभावनाओं पर अध्ययन इस पारंपरिक शिल्प के जटिल परिदृश्य की पड़ताल करता है। चिकनकारी, भारतीय संस्कृति में निहित एक कला रूप है, जिसे अपने विकास और अस्तित्व में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह अध्ययन इन चुनौतियों पर प्रकाश डालता है, जिसमें जटिल डिजाइनों की निरंतर मांग, बाजार दबाव और निरंतर कौशल विकास की आवश्यकता शामिल है। औद्योगिक मोर्चे पर, यह शोध चिकनकारी कारीगरों के लिए वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है। यह वैश्विक बाजार की गतिशीलता को संबोधित करने, तकनीकी प्रगति को अपनाने और स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों के लिए सहायक नीतियां बनाने के महत्व पर जोर देता है। अध्ययन तेजी से बदलते उद्योग में कारीगरों को आवश्यक कौशल से लैस करने के लिए सरकार और उद्यमियों दोनों द्वारा शुरू किए गए कौशल विकास कार्यक्रमों की स्थापना की भी वकालत करता है। इसके अलावा, अध्ययन व्यापक दर्शकों तक पहुंचने में चिकनकारी कारीगरों का समर्थन करने के लिए ऑनलाइन प्लेटफार्मों के एकीकरण का सुझाव देता है। ई-कॉमर्स की शक्ति का उपयोग करके, ये कारीगर वैश्विक स्तर पर ग्राहकों से जुड़ सकते हैं, पारंपरिक शिल्प के विकास और स्थिरता को बढ़ावा दे सकते हैं।***

कीवर्ड - ***चिकनकारी कढ़ाई, कारीगर, उद्योग, चुनौतिय, अंतरराष्ट्रीय बाजार***

----------X----------

परिचय

चिकनकारी कढ़ाई कारीगरों का क्षेत्र एक महत्वपूर्ण और सांविदानिक उद्योग है, जो विभिन्न स्तरों पर आर्थिक विकास में योगदान करता है। चिकनकारी कढ़ाई कारीगरों को हमेशा नए और कठिन मामूले तैयार करने की आवश्यकता है, जिससे उनका कला और कौशल निखर सके। चिकनकारी कारीगरों को अक्सर बाजारी दबाव और ग्लोबल सामरिक मुद्दों का सामना करना पड़ता है, जिससे उन्हें अपने उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में बनाए रखने के लिए नए तरीके सीखने की आवश्यकता होती है। तकनीक के दौर में, चिकनकारी कढ़ाई में नवीनतम तकनीकी उन्नतियों को सीखना और उन्हें अपनाना एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल उत्पादकों को अग्रणी बनाए रखेगा, बल्कि उन्हें बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बनाए रखने में भी सहायक होगा। चिकनकारी कढ़ाई कारीगरों के लिए स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए बजट्स और योजनाएं एक महत्वपूर्ण विषय हैं। इससे उन्हें अधिक विकासशील और लाभकारी उत्पादों की आवश्यकता होती है। सरकारें और उद्यमियों को चिकनकारी कढ़ाई कारीगरों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम शुरू करने चाहिए ताकि उन्हें नई तकनीकों का सामना करने के लिए तैयारी मिले। चिकनकारी कढ़ाई कारीगरों को ऑनलाइन बाजारों में समर्थन देने वाली प्रणालियों की स्थापना करने से, उन्हें विश्वभर में अधिक ग्राहकों तक पहुँचने में सहायक हो सकता है।

चिकनकारी की वर्तमान स्थिति

नवाबों का शहर लखनऊ चिकनकारी का विशिष्ट केंद्र होने का गौरव रखता है और इसे दिसंबर 2008 में प्रतिष्ठित भौगोलिक संकेत (जीआई) का दर्जा प्राप्त हुआ है। लखनऊ। चिकन परिधान की बहुमुखी प्रतिभा वास्तव में अद्वितीय है। कॉलेज गर्ल लुक से लेकर बेहद ग्लैमरस और स्टाइलिश रेड-कार्पेट लुक तक, इस हस्तकला ने सभी

www.ignited.in

को मंत्रमुग्ध कर दिया है। वर्तमान में, कपड़ों के अलावा, फैशन सहायक उपकरण, कुशन कवर, बेडस्प्रेड और सुरुचिपूर्ण पर्दे जैसे अभिनव चिकन माल का बाजार बहुत मांग में है और लगातार बढ़ रहा है। अब विशेष चिकन परिधानों के साथ-साथ फैशनप्रेमी विशेष हैंडबैग भी पा सकते हैं।

चित्र 1: विशेष चिकन फर्निशिंग और परिधान

महिला कारीगर

अब तक, चिकनकारी के कारीगर भारत में सबसे बड़ा समूह बनाते हैं जहां वे इस शिल्प से जुड़े लगभग 3 लाख कारीगरों का योगदान करते हैं। लखनऊ और उसके आसपास के गांवों में चिकनकारी कढ़ाई करके 5000 परिवार अपनी आजीविका कमाते हैं। लगभग 90% काम महिला कारीगरों द्वारा किया जाता है और कौशल पीढ़ियों से चला आ रहा है। फ़ैक्टरियों में काम करने के अलावा, कभी-कभी वे इन टुकड़ों को अपने घरों में भी लाते हैं। कारीगरों और बाज़ार के बीच एक बड़ा अंतर है जिसे बिचौलियों द्वारा पाट दिया जाता है। एक औसत महिला कारीगर महज रु. की मामूली रकम कमाती है. हर महीने 800-1000. आजीविका बनाए रखना एक प्रमुख मुद्दा बना हुआ है। "कोटवारा कलेक्शंस" नाम के इस चिकन व्यापार से जुड़े मशहूर बॉलीवुड निर्देशक मुजफ्फर अली ने चिकनकारी महिला कारीगरों के शोषण और दुर्दशा को समझा है। 1986 में, उन्होंने लखनऊ और उसके आसपास आधारित फिल्म "अंजुमन" का निर्देशन किया, जिसमें एजेंटों और बिचौलियों द्वारा स्थानीय कारीगरों की समस्याओं और शोषण को दर्शाया गया था।

चित्र 2: "अंजुमन, चिकनकारी कारीगरों पर फिल्म

महिला कारीगरों के सामने आने वाली चुनौतियाँ

चिकनकारी उद्योग भारत के सबसे बड़े कारीगर समूहों में से एक है। लेकिन वर्तमान में यह पिछले कुछ वर्षों में गिरती बिक्री की समस्या का सामना कर रहा है। कारणों में चीनी दोहरेपन की समस्या, शिक्षा की कमी, असंवेदनशील बिचौलिए, कम वेतन, लंबी उत्पादन प्रक्रिया आदि शामिल हैं। ये सभी समस्याएं और भी बड़ी हो जाती हैं क्योंकि चिकन उद्योग अत्यधिक असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

- **अत्यधिक कम भुगतान:-** चिकन कढ़ाई लखनऊ और उसके आसपास के प्रमुख पांच जिलों में लगभग 2.5 लाख कारीगरों द्वारा की जाती है। उनमें से ज्यादातर गरीब मुस्लिम महिलाएं हैं जो अपने दिन के घरेलू काम के बीच जटिल सुई का काम करने के लिए समय निकालती हैं। उन्हें मूंगफली दी जाती है, एक सामान्य महिला के कुर्ते के लिए लगभग 200 रुपये, जिसे तैयार होने में लगभग एक सप्ताह का समय लगता है। मूल रूप से, भुगतान समय की खपत और कारीगर के कौशल के आधार पर कम या ज्यादा हो सकता है।
- **बिचौलियों का खतरा:-** यह उद्योग बिचौलियों से भरा है जो स्थिति का अनुचित लाभ उठाते हैं और उनका और शोषण करते हैं। वे उद्यमियों से जितना लेते हैं, उसकी तुलना में कारीगरों को कम भुगतान करते हैं। वे कारखाने के मालिकों से सीधे ऑर्डर लेते हैं और उनकी कटौती के आधार पर कारीगरों को वितरित करते हैं और अपनी जेब में बड़ा हिस्सा लेते हैं। इन महिलाओं को बिक्री मूल्य का 5 प्रतिशत भी नहीं मिलता है। एक बिचौलिए की औसत आय लगभग होती है। रु. 20,000/- प्रति माह और एक कारीगर का वेतन लगभग है। रु 700/- प्रति माह. बिचौलिये इस स्थिति का अनुचित लाभ उठाते हैं और उनका और अधिक शोषण करते हैं।
- **चीनी चुनौती:-** इस चिकनकारी शिल्प को चीनी निर्माताओं से भी कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। हालाँकि पहली नज़र में चीन और लखनऊ की चिकनकारी कलाकृतियाँ एक जैसी दिखती हैं, लेकिन करीब से देखने और विश्लेषण करने पर गुणवत्ता में बड़ा अंतर दिखाई देगा। चाइनीज-चिकन मशीन द्वारा किया जाता है जबकि; लखनवी चिकनकारी हाथ से बनाई जाती है। गुणवत्ता पहलू के बावजूद, भारतीय

www.ignited.in

बाजार चीनी उत्पादों से भरा पड़ा है। अधिकांश खरीदार गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देते हैं, केवल मूल्य टैग देखते हैं, इसलिए, इस शिल्प को कम गुणवत्ता वाले चीनी सामान से कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

- **खराब स्वास्थ्य स्थितियाँ:-** दुर्भाग्य से, गरीबी के कारण होने वाली रोजमर्रा की समस्याओं के अलावा, उन्हें गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से भी जूझना पड़ता है जिसके इलाज के लिए उनके पास पैसे नहीं हैं। कम रोशनी वाले कमरों में लंबे समय तक लगातार काम करने के कारण कढ़ाई करने वाली महिलाओं में कई चिकित्सीय समस्याएं विकसित हो जाती हैं। इन महिलाओं की नजरें कम उम्र में ही कमजोर होने लगती हैं; कई मध्यम आयु वर्ग की महिलाओं को गर्भाशय ग्रीवा और रीढ़ की अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि उन्हें बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है। अधिकांश जनसंख्या एक कमरे वाले घर में रहती है। 22% लोगों के पास शौचालय नहीं है, 66% के पास बाथरूम नहीं है, 33% के पास बिजली नहीं है। श्रमिक गरीबी और अस्वास्थ्यकर वातावरण में रहते हैं।
- **शिक्षा/जागरूकता का अभाव:-** चिकनकारी की अधिकांश महिला कारीगर अशिक्षित हैं। प्रचार रणनीतियों और सरकारी योजनाओं को समझने के लिए, उम्र की परवाह किए बिना कारीगरों के लिए बुनियादी शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण है। जागरूकता की कमी के साथ-साथ कुशल जनशक्ति की कमी इस नाजुक शिल्प के विकास को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही है, जिसके परिणामस्वरूप, अधिकांश चिकनकारी मास्टर कारीगर प्रति दिन 300/- रुपये से भी कम कमाते हैं।
- **व्यक्तिगत समस्याएँ:-** चिकनकारी कारीगरों का निजी जीवन बहुत सारी व्यक्तिगत समस्याओं से भरा होता है। परिवार नियोजन की कमी, अस्वच्छ गंदे घरों, बहुविवाह और पर्दा प्रथा के कारण बड़े परिवारों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। चूंकि उनमें से अधिकांश गरीबी रेखा से नीचे हैं, इसलिए उन्हें इस शिल्प के माध्यम से पैसा कमाने की जरूरत है। लेकिन काम इस मायने में अस्थायी है कि उन्हें पता नहीं होता कि अगली बार उन्हें काम कब मिलेगा।
- **कोविड 19:-** नवंबर 2019 से, दुनिया कोविड 19 नामक इस महामारी का सामना कर रही है, और किसी भी अन्य उद्योग की तरह, हस्तशिल्प उद्योग को भी भारी नुकसान हुआ है। लगभग वार्षिक कारोबार वाला चिकनकारी उद्योग। लाखों कारीगरों, व्यापारियों और खुदरा विक्रेताओं को 3500 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है। चिकनकारी करने वाली महिलाएँ बिना किसी आय के बेकार बैठी थीं। भोजन, कपड़े और मकान जैसी आवश्यकताओं के लिए उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। दरअसल, यह महामारी गरीब कारीगरों के लिए घातक साबित हुई है।

इस महामारी के कारण 2021 और 2022 की गर्मियों का कारोबार चौपट हो गया था। फैक्ट्रियों और शोरूमों में स्टॉक का ढेर लग गया। कई अखिल भारतीय लॉक डाउन के कारण कपड़ों की घरेलू खपत भी प्रभावित हुई। कोई नया स्टोर नहीं खुला और यहां तक कि खुदरा स्टोरों को आगामी गर्मी के मौसम के लिए परिधान स्रोतों के कारण इन्वेंट्री बिल्ड-अप का सामना करना पड़ा, इसलिए आगामी सीज़न में कोई उत्पादन नहीं हुआ।

चिकनकारी टांके और डिज़ाइन की विविधता के कारण

यह एक अविश्वसनीय रूप से विस्तृत कढ़ाई शैली है जो आमतौर पर मुगल वास्तुकला और डिजाइनों के रूपांकनों को एकीकृत करती है। चिकनकारी कढ़ाई में पाए जाने वाले कई पैटर्न और डिज़ाइन में मुरी (गाँठदार काम), फंदा (गाँठ बनाने के लिए लूप), लेरची, कीलकांगन और बखिया (छाया का काम) शामिल हैं।

दस मुख्य टांके का उपयोग किया जाता है और इन्हें धागे की कच्ची खालों से बनाया जाता है। चिकनकारी के साथ कपड़ों को सजाने के लिए अन्य 26 या इतने ही टांके का उपयोग किया जाता है, कुल मिलाकर लगभग 36 अलग-अलग टांके होते हैं।

यहां 9 प्रकार के टांके के बारे में जानना है

उपरोक्त प्रकार के टांके के अलावा, चिकनकारी में मकरा, करन, साज़ी, बंजकली आदि जैसे बहुत अधिक डिज़ाइन की उपलब्धता है।

चिकनकारी की कला उत्पादक आत्मनिर्भरता के साथ सदियों से जीवित है और अभी भी इसकी अद्वितीय अपील बरकरार है। सौम्य लालित्य और अनुग्रह की

www.ignited.in

भावना पैदा करते हुए, चिकनकारी भारत की एक शानदार हाथ की कढ़ाई है जो भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अपने सूक्ष्म आकर्षण और चमकदार बनावट के लिए प्रसिद्ध है। पिछले कुछ वर्षों में नए डिजाइन और शैलियाँ सामने आई हैं लेकिन सफेद धागे वाली कढ़ाई का जादू और लयात्मकता वैसी ही बनी हुई है।

चिकनकारी कढ़ाई अपने जटिल डिजाइनों के लिए 36 विभिन्न सिलाई तकनीकों का उपयोग करती है। आज इनमें से कई टांके को परिधान को आधुनिक रूप देने के लिए मोती, दर्पण और मुकैश अलंकरणों के साथ मिलाया जा रहा है। कुछ सिलाई के नाम हैं:

1. टेपची या चलने वाली सिलाई
2. बखिया या छाया कार्य
3. ज़ंजीरा या चेन सिलाई
4. कील या तने की सिलाई
5. फंदा या फ्रेंच गाँठ
6. मुरी या छोटी बटनहोल सिलाई
7. जाली या जाल
8. हूल या सुराख
9. बीज टांका या खटाऊ
10. बनारसी सिलाई या चोटी सिलाई

हालाँकि पारंपरिक कढ़ाई की यह प्राचीन कला मलमल के कपड़े पर, सफेद कपड़े पर सफेद धागे के साथ की जाती थी, लेकिन अब यह विभिन्न प्रकार के वस्त्रों और रंगों, विशेषकर पेस्टल पर आम है।

ज़रदोज़ी शिल्प का ऐतिहासिक विकास

जब हम इस शिल्प के ऐतिहासिक विकास का पता लगाते हैं। इस कला का सबसे पुराना दस्तावेजी साक्ष्य वैदिक युग में पाया गया होगा। वैदिक काल में, सोने का उपयोग कपड़े की सजावट में विभिन्न तरीकों से किया जाता रहा है; कपड़े को सोने और चांदी के रंग से रंगना, कपड़े को कढ़ाई और पिपली से सजाना, सोने या चांदी के साथ शानदार तरह-तरह के पैटर्न बुनना, इत्यादि। ऋग्वेद में अटका, द्रापी, पेसा जैसे कुछ शब्दों का उल्लेख किया गया है जो सिले हुए वस्त्रों का संकेत देते हैं। 5 अटका शब्द का अर्थ सोने के धागे से कढ़ाई किया हुआ परिधान है। इसे सोने का कपड़ा कहा जाता था। पी।सी। के समान रॉय ने महाभारत में बताया कि कंबोज के राजा ने युधिष्ठर को सोने के धागे से कढ़ाई किए हुए कई प्रकार के जानवरों की खालें और ऊनी कंबल (ऊनी कपड़े) भेंट किए थे।6 वाल्मिकी की रामायण में सोने के धागे के काम के कई प्रमाण हैं। महाकाव्य महाराजात्वस के बारे में बताता है कि सोने और चांदी के धागों से कढ़ाई किए गए कपड़े। ये संदर्भ बिना किसी संदेह के संकेत देते हैं कि वेशभूषा पर सोने चांदी के धागों का काम महाकाव्य काल के दौरान भव्य परंपरा का हिस्सा था। जातक जैसे अन्य ग्रंथों में कुछ और साक्ष्य दिए गए हैं, जहां हाथियों के लिए सोने की पगड़ी और जाल सोने के काम से बनाए जाते थे। जैन साहित्य आचारांग सूत्र8 और अजंता पेंटिंग गुफा संख्या XVII में कढ़ाई वाले कपड़ों का कुछ चित्रण है। बाणभट्ट के हर्षचरित में वर्णन मिलता है जहां चमकदार मलमल के वस्त्र को सोने के धागे से कढ़ाई किया गया था। 10 गुप्त और कुषाण काल में भी सोने के धागे से कढ़ाई की गई थी।

अवध उनमें से एक है, जिस पर 1722 ई। से 1856 ई। तक अवध के नवाबों का शासन रहा। अवध के नवाबों ने अपनी शाही पोशाक में मुगल दरबार की संस्कृति का पालन किया। लखनऊ में कारीगरों के प्रवास के साथ, यह शाही शिल्प लखनऊ दरबार में आया और नवाबों की शाही पोशाक का हिस्सा बन गया। नवाब शुजाउदौला को हस्तशिल्प में रुचि थी। वह अपने दरबार में कला का संरक्षण करता था। जब उत्तर भारत की अधिकांश राजनीति कठिनाइयों से जूझ रही थी उस समय अवध ही एकमात्र ऐसा राज्य था जिसने हस्तशिल्प और उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए अपना समय समर्पित किया। नवाब आसफ अल-दौला ने अपने पिता की नीति का पालन किया। उन्होंने कई कारीगरों को भूमि अनुदान प्रदान किया। इसके तुरंत बाद लखनऊ जरदोजी से बनी सजावट का प्रमुख केंद्र बन गया। होए ने उल्लेख किया कि यह कहना मुश्किल है कि यह शाही शिल्प किस समय तक लखनऊ आया था, लेकिन यह कहा जा सकता है कि आसफ-उद-दौलाजरदोजी के क्षेत्र में अवधी संस्कृति का हिस्सा बन गया।14 उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि लखनऊ की जरदोजी बेहतर थी उत्तर भारत के अन्य केन्द्रों की तुलना में। लखनऊ भारी ज़रदोज़ी कढ़ाई के लिए प्रसिद्ध है।

www.ignited.in

चिकनकारी कढ़ाई का भविष्य

चिकनकारी कढ़ाई का भविष्य रोमांचक संभावनाओं से भरपूर है, जो परंपरा, नवीनता और उपभोक्ता की बदलती प्राथमिकताओं के गतिशील मिश्रण से प्रेरित है। यहां कुछ प्रमुख पहलू दिए गए हैं जो चिकनकारी के लिए एक आशाजनक भविष्य का सुझाव देते हैं:

1. डिजाइन में नवाचार

समकालीन अनुकूलन: चिकनकारी कारीगरों और डिजाइनरों द्वारा पारंपरिक रूपांकनों के समकालीन अनुकूलन की खोज जारी रखने की संभावना है। आधुनिक डिज़ाइन और पैटर्न का मिश्रण इस कालातीत शिल्प के सार को संरक्षित करते हुए बदलती सौंदर्य संबंधी प्राथमिकताओं को पूरा करेगा।

2. सतत अभ्यास

पर्यावरण-अनुकूल सामग्री: चूंकि स्थिरता फैशन उद्योग में एक केंद्र बिंदु बन गई है, चिकनकारी से पर्यावरण-अनुकूल सामग्री को अपनाने की उम्मीद है। जैविक कपड़ों और रंगों के उपयोग को प्रमुखता मिल सकती है, जिससे चिकनकारी को टिकाऊ और नैतिक फैशन की दिशा में वैश्विक आंदोलन के साथ जोड़ा जा सकता है।

3. प्रौद्योगिकी एकीकरण

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म: चिकनकारी कारीगर और व्यवसाय विपणन और बिक्री के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का तेजी से लाभ उठा सकते हैं। चिकनकारी उत्पादों की ऑनलाइन उपस्थिति, अनुकूलन विकल्पों के साथ मिलकर, वैश्विक दर्शकों के लिए पहुंच बढ़ा सकती है।

4. अंतर्राष्ट्रीय डिजाइन सहयोग: चिकनकारी कारीगरों और अंतर्राष्ट्रीय डिजाइनरों के बीच सहयोग इस शिल्प को वैश्विक मंच पर आगे बढ़ा सकता है। इस तरह की साझेदारियों से चिकनकारी की विशेषज्ञता को विविध डिजाइन प्रभावों के साथ जोड़कर नवोन्वेषी संग्रह को बढ़ावा मिल सकता है।

5. कौशल विकास पहल: युवा पीढ़ी को चिकनकारी तकनीकों में कौशल विकास और प्रशिक्षण पर केंद्रित पहल इसकी निरंतरता के लिए महत्वपूर्ण होगी। भविष्य के कारीगरों को जटिल कौशल प्रदान करने के लिए शैक्षिक कार्यक्रम और प्रशिक्षुता स्थापित की जा सकती है।

6. अनुकूलन और वैयक्तिकरण: अनुकूलन और वैयक्तिकरण का चलन जारी रहने की संभावना है। व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के अनुरूप चिकनकारी उत्पाद अद्वितीय और व्यक्तिगत फैशन वस्तुओं की बढ़ती मांग को पूरा करेंगे।

7. पारंपरिक पुनरुद्धार: पारंपरिक चिकनकारी शैलियों को पुनर्जीवित और संरक्षित करने के प्रयासों को गति मिल सकती है। शिल्प की प्रामाणिकता सुनिश्चित करते हुए कारीगर और संगठन पारंपरिक रूपांकनों का दस्तावेजीकरण और संरक्षण करने में सहयोग कर सकते हैं।

8. हाई-फैशन एकीकरण: हाई-एंड फैशन में चिकनकारी का एकीकरण जारी रह सकता है, डिजाइनर इसे लक्जरी संग्रह में शामिल कर रहे हैं। यह परिष्कार और शिल्प कौशल के प्रतीक के रूप में चिकनकारी को आगे बढ़ाने में योगदान दे सकता है।

9. कारीगर सशक्तिकरण

उचित व्यापार प्रथाएँ: चिकनकारी कारीगरों के लिए उचित व्यापार प्रथाओं और उचित वेतन की वकालत संभवतः तेज होगी। उपभोक्ता नैतिक रूप से उत्पादित वस्तुओं को तेजी से महत्व दे रहे हैं, और निष्पक्ष व्यापार सिद्धांतों का पालन करने वाले व्यवसाय प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल कर सकते हैं।

10. सांस्कृतिक आदान-प्रदान: संक्षेप में, चिकनकारी का भविष्य जीवंत और अनुकूलनीय प्रतीत होता है, जो परंपरा और आधुनिकता के अंतर्संबंध को नेविगेट करने के लिए तैयार है। चूँकि यह शिल्प वैश्विक दर्शकों को आकर्षित करता रहेगा, इसकी स्थिरता इसकी समृद्ध विरासत को संरक्षित करने और समकालीन दुनिया के नवाचारों को अपनाने के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन पर निर्भर करेगी।

चिकन उद्योग

भारत में चिकन कढ़ाई की कला लगभग 400 वर्ष पुरानी है। ऐसा माना जाता है कि यह एक फ़ारसी शिल्प है, जो मुग़ल सम्राट जहाँगीर की रानी नूरजहाँ के साथ भारत आई थी, जिसका अभ्यास उनकी और अन्य बेगमें (पत्नियाँ) करती थीं। अवध के शासकों के संरक्षण में चिकनकारी का विकास हुआ। चिकन उद्योग की कई विशिष्ट विशेषताएं हैं जिन्हें हमें ध्यान में रखना चाहिए। कोई केंद्रीकरण नहीं है (सीएफ. वार्ष्णेय 1997,

विल्किंसन-वेबर 1999), जिसका अर्थ है कि कारखाने जैसी कोई जगह नहीं है जहां पूरे उत्पाद का निर्माण किया जाता है। चिकन के निर्माण में विभिन्न कलाकार शामिल हैं जो स्थानिक और सामाजिक रूप से एक दूसरे से दूर हैं। शहर के विभिन्न इलाकों और पड़ोसी गांवों के कारीगर भी उत्पादन प्रक्रिया में शामिल हैं। उद्योग की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि कोई भी कारीगर केवल सभी कार्य नहीं कर सकता और तैयार उत्पाद नहीं बना सकता। यह तथ्य सहयोग की एक अपरिहार्य आवश्यकता को स्थापित करता है, जो आवश्यक रूप से पारस्परिक निर्भरता में विकसित होती है। चिकन उत्पादन विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, वर्ग और जाति पृष्ठभूमि के लोगों को इस साझा श्रम के माध्यम से उत्पादन प्रक्रिया में बातचीत करने और योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करता है। चिकन एक ही जगह या एक व्यक्ति द्वारा नहीं बनाया जा सकता. इसका अस्तित्व लोगों के साझा प्रयास पर निर्भर करता है और उनका जीवन चिकन और इसके उत्पादन पर निर्भर करता है, जबकि चिकन के माध्यम से वे एक-दूसरे पर निर्भर हो जाते हैं। इस प्रकार चिकन कढ़ाई उद्योग पारस्परिकता का एक आर्थिक पुल बनाता है

चिकन-शिल्प की विशिष्टता

चिकन का शाब्दिक अर्थ है 'कढ़ाई'। यह पारंपरिक कढ़ाई शैली लखनऊ के सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध कला रूपों में से एक है, जिसे मुगलों द्वारा पेश किया गया माना जाता है। परिधान पर सरल और सटीक हस्तकला, इसे एक बहुत ही सूक्ष्म, उत्तम दर्जे का एहसास देती है जिसमें आधुनिक कढ़ाई तकनीकों की कमी है। परिधान का मुख्य सार एक साधारण डिज़ाइन है, और जबकि परिधान को समृद्ध दिखने के लिए अब रूपांकनों को जोड़ा जाता है, यह अभी भी एक सरल और किफायती कपड़े का विकल्प बना हुआ है। चिकनकारी एक कला है, जिसके परिणामस्वरूप सादे कपास और ऑर्गेंडी को जादू के बहते गज में बदल दिया जाता है। "चिकन" शब्द फ़ारसी शब्द ठाठ से लिया गया है, जो संगमरमर या लकड़ी पर किए गए 'जाली' काम को संदर्भित करता है। मलमल पर सफेद धागे से पारंपरिक चिकनकारी की कढ़ाई की जाती थी। धीरे-धीरे ऑर्गेंडी, मलमल, तनजीब, कॉटन और सिल्क जैसे अन्य कपड़ों पर भी काम होने लगा। वर्तमान में चिकन कढ़ाई में सभी प्रकार के कपड़े जैसे वॉइल, शिफॉन, लेनिन, रुबिया, खादी और हैंडलूम कपड़े, टेरी कॉटन, पॉलिएस्टर, जॉर्जेट, टेरी वॉयलेट आदि का उपयोग किया जाता है।

विश्व स्तर पर चिकनकारी कढ़ाई विपणन

दुनिया भर में चिकनकारी कढ़ाई के विपणन में एक रणनीतिक दृष्टिकोण शामिल है जो इस पारंपरिक भारतीय कला रूप से जुड़ी अनूठी विशेषताओं, सांस्कृतिक महत्व और शिल्प कौशल को उजागर करता है। वैश्विक स्तर पर चिकनकारी कढ़ाई को बढ़ावा देने के लिए यहां प्रमुख रणनीतियां दी गई हैं:

1. **ऑनलाइन उपस्थिति:** एक समर्पित वेबसाइट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से एक मजबूत ऑनलाइन उपस्थिति स्थापित करें। परिधान, सहायक उपकरण और घर की सजावट की वस्तुओं सहित चिकनकारी उत्पादों की एक विविध श्रृंखला का प्रदर्शन करें। उच्च-गुणवत्ता वाले दृश्य और आकर्षक सामग्री शिल्प कौशल के इर्द-गिर्द एक सम्मोहक कथा बनाने में मदद कर सकते हैं।
2. **ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म:** व्यापक दर्शकों तक पहुंचने के लिए वैश्विक ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म का लाभ उठाएं। स्थापित ऑनलाइन बाज़ारों के साथ सहयोग करें जो हस्तनिर्मित या पारंपरिक शिल्प में विशेषज्ञ हैं। यह विविध ग्राहक आधार तक पहुंच प्रदान करता है और विश्वसनीयता बनाता है।
3. **डिजाइनरों के साथ सहयोग:** चिकनकारी को अपने संग्रह में शामिल करने के लिए अंतरराष्ट्रीय फैशन डिजाइनरों के साथ सहयोग करें। वैश्विक फैशन कार्यक्रमों और शो में भागीदारी से दृश्यता में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है और फैशन उद्योग का ध्यान आकर्षित हो सकता है।
4. **कहानी सुनाना और विरासत को बढ़ावा देना:** चिकनकारी के पीछे की कहानी साझा करें, इसकी सांस्कृतिक जड़ों, पारंपरिक तकनीकों और कारीगरों के कौशल पर जोर दें। प्रत्येक टुकड़े से जुड़ी विरासत और शिल्प कौशल को उजागर करने से मूल्य बढ़ता है और उपभोक्ताओं को अद्वितीय, सार्थक उत्पादों की तलाश होती है।
5. **शैक्षिक पहल:** चिकनकारी की कला के बारे में वैश्विक दर्शकों को शिक्षित करने के लिए कार्यशालाएं, वेबिनार या ऑनलाइन ट्यूटोरियल आयोजित करें। जटिल सिलाई तकनीकों, शिल्प के इतिहास और प्रत्येक रूपांकन के महत्व के

www.ignited.in

बारे में जानकारी प्रदान करने से चिकनकारी के प्रति सराहना बढ़ती है।

6. **अनुकूलन और वैयक्तिकरण:** चिकनकारी उत्पादों के लिए अनुकूलन विकल्प प्रदान करें। यह न केवल व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को पूरा करता है बल्कि चिकनकारी को अभिव्यक्ति के एक व्यक्तिगत और अद्वितीय रूप के रूप में भी स्थापित करता है। वैयक्तिकृत वस्तुओं का मूल्य अक्सर अधिक होता है।
7. **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार शो में भागीदारी**: फैशन, कपड़ा और हस्तनिर्मित शिल्प पर केंद्रित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार शो और प्रदर्शनियों में चिकनकारी का प्रदर्शन करें। यह दुनिया भर के संभावित खरीदारों, खुदरा विक्रेताओं और सहयोगियों से जुड़ने के लिए एक मंच प्रदान करता है।
8. **प्रभावशाली सहयोग:** प्रभावशाली लोगों और ब्लॉगर्स के साथ साझेदारी जो फैशन, शिल्प या सांस्कृतिक अन्वेषण में विशेषज्ञ हैं। प्रभावशाली लोग आकर्षक सामग्री बना सकते हैं, चिकनकारी उत्पादों को प्रदर्शित कर सकते हैं और अपने अनुभव साझा कर सकते हैं, जो ब्रांड की दृश्यता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है।
9. **गुणवत्ता आश्वासन और प्रमाणन:** अंतरराष्ट्रीय उपभोक्ताओं के बीच विश्वास बनाने के लिए चिकनकारी उत्पादों के लिए गुणवत्ता प्रमाणन प्राप्त करें। प्रामाणिक सामग्रियों के उपयोग, नैतिक प्रथाओं और पारंपरिक शिल्प कौशल मानकों के पालन पर जोर दें।
10. **स्थानीय विपणन अभियान:** विशिष्ट क्षेत्रों की प्राथमिकताओं और सांस्कृतिक बारीकियों के अनुरूप विपणन अभियान तैयार करना। स्थानीय रुचियों और रुझानों को समझने से लक्षित और प्रासंगिक सामग्री बनाने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष

चिकनकारी सुईवर्क बहुमुखी और सदाबहार है। कढ़ाई की इस असाधारण कला का उपयोग विभिन्न प्रकार के कपड़ों, जैसे साड़ी, कुर्तियां, लहंगा और चिकनकारी गाउन पर किया जा सकता है। इस वजह से, डिज़ाइनर विभिन्न शैलियों और डिज़ाइनों के साथ प्रयोग कर सकते हैं। आज यह उन सभी के लिए एक विकल्प बन गया है जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों को अपनाना चाहते हैं और भारत के समृद्ध शिल्प और डिजाइन को बनाए रखना चाहते हैं। त्योहारी सीज़न और शादी के सीज़न के लिए, चिकनकारी कढ़ाई वाले आउटफिट बहुत ज़रूरी बन गए हैं। लोग इस शिल्प का उपयोग करने का आनंद भी लेते हैं क्योंकि यह टिकाऊ फैशन का एक रूप है। डिजाइनरों और फैशन प्रशंसकों के पास स्थानीय कलाकारों को वित्त पोषण करके चिकनकारी कढ़ाई में एक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल विकल्प है।

संदर्भ

1. विल्किंसन-वेबर, क्लेयर। एम. (1999)। लखनऊ कढ़ाई उद्योग में कढ़ाई जीवन, महिलाओं का कार्य और कौशल। न्यूयॉर्क: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 1-23, 124, 287-306।
2. विल्किंसन-वेबर, क्लेयर। एम. (सितंबर 2004)। दक्षिण एशिया में महिलाएं, काम और शिल्प की कल्पना। समकालीन दक्षिण एशिया, 287-306।
3. वोल्फ्लिन, एच., और हॉटिंगर, एम. (1950)। कला इतिहास के सिद्धांत, बाद की कला में शैली के विकास की समस्या। न्यूयॉर्क: डोवर प्रकाशन, 1-17, 106,196-200।
4. वाई.बी. यिप और एस.सी. हो, चीनी समुदाय की मध्यम आयु वर्ग की महिलाओं में नए और बार-बार होने वाले कमर दर्द पर सामाजिक-मनोवैज्ञानिक तनाव का प्रभाव, साइकोल हेल्थ मेड। 6 (2001) 361-72.
5. वासन, एन. और वासन, एस. (2016)। बदलते परिदृश्य में उलटफेर: चिकनकारी पर एक मामला।
6. वत्स्यान, के. (2010)। एशिया में कढ़ाई "सुई धागा", विजडम ट्री, नई दिल्ली।
7. टी. सरना और ए. शुक्ला, चिकन कढ़ाई के घरेलू उत्पादन में लगी महिलाओं के बीच शारीरिक-स्वास्थ्य और मनोविक्षुब्धता का एक अध्ययन, सोस इंडिक रेस। 32 (1994) 179-191.
8. शेट्टी, एस.वी. (1994)। ग्रामीण कारीगरों और आधुनिकीकरण के लिए बैंक वित्त, जयपुर। थिंड, के.एस. (2009)। उत्तरी भारत के कारीगर और शिल्पकार।
9. सिंह पी और शर्मा पी. (2016)। चिकनकारी श्रमिक और व्यावसायिक खतरे। गैलेक्सी इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल। 4(5): 1-10.

10. सिंह पी और शर्मा पी. (2018)। चिकनकारी उद्योगों में शामिल महिला श्रमिकों की कार्य प्रोफ़ाइल और उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव। फार्माकोग्नॉसी और फाइटोकेमिस्ट्री जर्नल. 7(2): 1169-1174

11. सिंह, एन. और गुप्ता, ए. (2014)। उत्तर प्रदेश की चिकनकारी पर अध्ययन, रेव. रेस., 3 (7):

12. सिंह, पी., और शर्मा, पी. (2018)। लघु उद्योग में चिकनकारी कार्य में शामिल श्रमिकों की स्थिति। जर्नल ऑफ फार्माकोग्नॉसी एंड फाइटोकेमिस्ट्री, 7(4), 1175-1177।

Corresponding Author

Kiran Sharma*

Research Scholar, Bhagwant University, Rajasthan

www.ignited.in